इकाई 13 अभिज्ञानशाकुन्तलम् : चतुर्थ अंक का वैशिष्ट्य

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 चतुर्थ अंक की कथा

13.3 प्रकृति का मानवीकरण

13.4 कालिदास की रचनाओं में ध्वन्यात्मकता

13.5 काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला

13.6 उपमा कालिदासस्य

13.7 सारांश

13.8 शब्दावली

13.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.10 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- नाटक में विष्कम्भक-योजना के महत्त्व एवं ज्ञान से परिचित होंगे।
- प्रकृति का मानवीकरण विषय को उदाहरण के साथ जानेंगे।
- काव्य में ध्वनि के भेदों से परिचित होंगे।
- महाकवि कालिदास के काव्यों में ध्वन्यात्मकता का परिचय प्राप्त करेंगे।

13.1 प्रस्तावना

महाकवि कालिदास प्रणीत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नामक नाटक लौकिक संस्कृत वाङ्मय में अपनी अपरिमित विशेषताओं से अनुपम स्थान रखता है। इस पाठ के माध्यम से आप 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से परिचित होंगे। इसके पूर्व वाले अंक अर्थात् तृतीय अंक में राजा दुष्यन्त कण्वशिष्यों की आज्ञा से राक्षसों से तपोवन में प्रवर्तमान यज्ञ की रक्षा करने का दायित्व स्वीकार करते हैं। वैसे शकुन्तला के प्रेमपाश में बँधे राजा दुष्यन्त महर्षि कण्व के आश्रम में कुछ दिन रहने हेतु सोच भी रहे थे कि तभी महर्षि कण्व की अनुपस्थिति से यज्ञ में बढ़ते हुए राक्षसों के उपद्रवों को देखकर कण्व-शिष्य यज्ञ की रक्षा करने के लिए दुष्यन्त से कुछ दिन आश्रम में निवास हेतु प्रार्थना करते हैं जिसे दुष्यन्त अविलम्ब स्वीकार करते हैं। कण्वशिष्यों की वह प्रार्थना दुष्यन्त के अभीष्ट की सिद्धि के लिए होती है। शिष्यों के आज्ञानुसार दुष्यन्त के आश्रम में प्रवेश करने से ही राक्षसों का विघ्न दूर होने लगता है। आश्रम में निवास करने के कारण दुष्यन्त को शकुन्तला के पास रहने और प्रेम बढ़ाने का अवसर मिलता है। गत

तृतीय अंक में मालिनी नदी के तीर पर स्थित लतामण्डप में शकुन्तला और दुष्यन्त की विविध शृंगारात्मक चेष्टाओं का मनोहर वर्णन देखने को मिलता है। इसी अंक में जब अनसूया ने राजा दुष्यन्त से शकुन्तला का सर्वतोभावेन ध्यान रखने के लिए कहा तो दुष्यन्त कहता है कि–

मेरे रनिवास में स्त्रियों की कमी नहीं, प्रिय भार्यायें भी बहुत हैं, तो भी मेरे कुल की प्रतिष्ठा दो कारणों से ही होगी, पहली समुद्रपर्यन्त फैली हुई पृथिवी पर शासन करने से और दूसरी तुम दोनों की प्रिय सखी शकुन्तला से।

दोनों सखियाँ दुष्यन्त की उक्त प्रतिज्ञा को सुनकर हर प्रकार से निश्चिन्त हो जाती हैं। इसके बाद दोनों सखियाँ राजा दुष्यन्त और शकुन्तला को प्रेमालाप करने का अवसर देने के लिए बहाना बनाकर लतामण्डप से बाहर चली जाती हैं। जब राजा दुष्यन्त लतामण्डप में होता है तभी मुनियों की राक्षसों के द्वारा यज्ञ में उत्पात मचाने की ध्वनि सुनाई देती है जिसे सुनकर राजा दुष्यन्त तपोवन की रक्षा हेतु आश्रम में प्रवेश करते हैं। इसी वर्णन के साथ तृतीय अंक समाप्त होता है। अब आपको इसके आगे की कथावस्तु का ज्ञान इस इकाई के माध्यम से होगा।

13.2 चतुर्थ अंक की कथा

महाकवि कालिदास की प्रसिद्धि में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का विशेष योगदान है। कथावस्तु की रोचकता एवं मार्मिकता की दृष्टि से 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का चतुर्थ अंक उल्लेखनीय है। इस अंक का प्रारम्भ नाटक की विष्कम्भक योजना से अनसूया और प्रियंवदा के पुष्प तोड़ने के दृश्य से होता है। नाटक में जो दृश्य नहीं दिखाया जा सकता तथा भविष्य में होने वाली घटना के प्रति पूर्व में जो संकेत किया जाता है उसे विष्कम्भक योजना के द्वारा व्यक्त किया जाता है।

अंक के प्रारम्भ में विष्कम्भक योजना द्वारा पुष्प तोड़ती हुई अनसूया और प्रियंवदा के वार्तालाप से गान्धर्व विधि से शकुन्तला और दुष्यन्त के विवाह की सूचना मिलती है। दोनों सखियों के वार्तालाप के क्रम में यह भी ज्ञात होता है कि राजा दुष्यन्त, शकुन्तला को मुद्रिका देकर अपनी राजधानी हस्तिनापुर लौट गया है। राजा दुष्यन्त के राजधानी पहुँच जाने के बाद दोनों सखियाँ आशंका करती हैं कि– राजधानी पहुँचकर कहीं राजा दुष्यन्त शकुन्तला को भूल न जाए। इतने में ही उन्हें आश्रम में आए हुए किसी ऋषि (दुर्वासा) का कर्कश स्वर सुनाई देता है। सखियाँ आश्रम में ऋषि का आगमन जानकर शीघ्रतापूर्वक उसके सत्कारार्थ पहुँचना चाहती हैं। यद्यपि आश्रम में शकुन्तला भी विद्यमान है किन्तु सखियाँ जानती हैं कि शकुन्तला तो दुष्यन्त के स्मरण में ही लीन है, उसका आस-पास हो रही किसी घटना पर ध्यान नहीं रहता। अतः वे पुष्पों का चयन छोड़कर आश्रम चली जाती हैं। जैसे ही आश्रम की सीमा में प्रवेश करती हैं वैसे ही उन दोनों ने तीक्ष्ण स्वर में दुर्वासा को शकुन्तला को शाप देते हुए सुना –

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।

स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।।1/4।।

जब सखियों ने शकुन्तला को शाप देकर आश्रम से बाहर आते दुर्वासा को देखा तो उन्हें दुर्वासा के शाप के अमिट प्रभाव को जानकर भय हुआ फलतः शकुन्तला को शाप

से मुक्ति दिलाने के लिए प्रियंवदा दुर्वासा के पीछे जाती है और शाप से मुक्ति के लिए प्रार्थना करती है। प्रियंवदा की मधुर प्रार्थना से कुछ द्रवित होकर दुर्वासा ने कहा कि मेरा शाप अन्यथा (निष्फल) नहीं हो सकता किन्तु यदि शकुन्तला (दुष्यन्त से प्राप्त) किसी चिह्न/आभरण को दिखा देगी तो दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा।

इसके बाद प्रियंवदा आश्रम आकर अनसूया से शापमुक्ति के बारे में बताती है। अनसूया और प्रियंवदा जब शकुन्तला के समीप पहुँचती हैं तब भी शकुन्तला दुष्यन्त के ध्यान में लीन रहती है। उस समय प्रियंवदा ने शकुन्तला को देखकर कहा कि – 'अनसूये, पश्य तावत्। वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी। भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम्' अर्थात् यह तो बायें हाथ पर अपने मुँह को रखकर दुष्यन्त की चिन्ता में ही लीन है इसे तो अपनी ही सुध-बुध नहीं है तो अतिथि को कैसे देखती? अनसूया और प्रियंवदा शकुन्तला के प्रति अत्यन्त संवेदित हैं। दोनों ने दुर्वासा से मिले शाप को शकुन्तला से छिपाने का निश्चय किया। प्रियंवदा ने भी अनसूया के प्रस्ताव का अनुमोदन किया। इसी वर्णन के साथ विष्कम्भक समाप्त होता है। विष्कम्भक के माध्यम से हमें निम्न सूचनाएँ मिलती हैं –

01 दुष्यन्त और शकुन्तला का गान्धर्व विधि से विवाह होने की सूचना।

02 दुर्वासा के शाप के प्रभाव से दुष्यन्त को शकुन्तला का विस्मरण।

03 किसी आभरण को दिखाने से दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण होना।

04 राजधानी लौटने की बेला में दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को मुद्रिका/अंगूठी प्रदान करना।

05 दुष्यन्त को शकुन्तला के स्मरण हेतु मुद्रिका की उपादेयता।

इसके बाद रंगमंच पर सोकर उठे कण्व के शिष्य का प्रवेश होता है जो प्रवास से सद्यः लौटे महर्षि कण्व के आदेश से प्रातःकालीन समय का आकलन करने के लिए आश्रम से बाहर निकला है। आश्रम से बाहर निकलते ही उसे प्रातःकाल होने का निश्चय होता है।

इसके बाद अनसूया शकुन्तला के विषय में चिन्तन करती है कि यह दुर्वासा के शाप का ही प्रभाव है जो इतने दिन बीत जाने के बाद भी दुष्यन्त शकुन्तला को लेने नहीं आए। न ही उन्होंने शकुन्तला विषयक कोई पत्र भेजा। अनसूया दुष्यन्त के पास उसके द्वारा राजधानी लौटने के अवसर पर शकुन्तला को पहनाई गई मुद्रिका को भेजने के बारे में सोचती ही है कि इतने में उसे प्रियंवदा का स्वर सुनाई देता है। प्रियंवदा कहती है कि हे अनसूये! चलो शकुन्तला की विदाई करते हैं। अनसूया बड़े कौतूहल से पूछती है कि यह विदाई कैसे होने लगी अभी तो तात कण्व शकुन्तला के विवाह के विषय में भी अज्ञात हैं तो वह कहती है कि आज मैं शकुन्तला के पास– सुखपूर्वक निद्रा आई की नहीं ?– यह पूछने के लिए जब गई थी तो वहाँ पहले से ही तात कण्व विद्यमान थे वे लज्जा से शिर झुकाकर खड़ी शकुन्तला को गले लगाते हैं और उसके विवाह का अभिनन्दन करते हैं।

प्रियंवदा के इस वचन को सुनकर अनसूया कहती है कि तात काश्यप को यह सूचना कैसे मिली? तो प्रियंवदा ने कहा कि अशरीरिणी (शरीररहित) वाणी द्वारा तात को शकुन्तला के विवाह की सूचना मिलती है–

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः ।

अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव ।।4/4।।

विदाई के अवसर पर शकुन्तला को विविध प्रकार से सजाया जाता है। सखियाँ आश्रम के अनेक सुलभ प्रसाधनों से शकुन्तला का अलङ्करण करती हैं किन्तु सखियों को लगता है कि वन के इन प्रसाधनों से शकुन्तला शोभित नहीं हो पा रही है क्योंकि शकुन्तला की देहवल्ली बहुमूल्य आभूषणों से सजाने योग्य है, इसलिए प्रियंवदा कहती है– **'आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः प्रसाधनैर्विप्रकार्यते'।** इसी समय दो ऋषिकुमारों का प्रवेश होता है और उसमें से नारद नामक ऋषिकुमार कहता है कि– **'इदमलङ्करणम्। अलङ्क्रियतामत्रभवती'।** माता गौतमी ऋषिकुमार नारद से पूछती हैं कि यह बहुमूल्य आभूषण और परिधान कहाँ से प्राप्त हुए? तो ऋषिकुमार नारद ने उसे महर्षि कण्व के प्रभाव से प्राप्त हुआ बताया। गौतमी फिर पूछती है कि क्या कण्व जी ने मानसिक सिद्धि से इन आभूषणों को प्रकट किया तो दूसरा ऋषिकुमार कहता है कि तात ने हमें शकुन्तला के निमित्त वन-वनस्पतियों से पुष्प लाने के लिए आदेश दिया था। इसके बाद वन के उन वनस्पतियों ने ही एक-दूसरे वनस्पतियों से स्पर्धा करते हुए सम्मुखस्थ बहुमूल्य वस्तुओं को प्रदान किया है।

प्रियंवदा वन-वनस्पतियों की इस विलक्षण कृपा को शकुन्तला को पति के घर राजलक्ष्मी कहलाने के सौभाग्य का निमित्त अथवा सूचक मानने लगती है। अनसूया और प्रियंवदा आश्रम में रहने के कारण नगरोचित आभूषण पहनने पहनाने की विधि से सर्वथा अपरिचित हैं अतः वे दोनों चित्रकार द्वारा तैयार किये गये चित्रों को देख-देखकर विलक्षण रीति से शकुन्तला को आभूषण पहनाती हैं।

इसके बाद स्नान करके सरोवर से बाहर निकलते हुए साथ में कुछ सोचते हुए कण्व का रंगमंच पर प्रवेश होता है–

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम् ।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ।।4/6।।

शकुन्तला की शृंगार विधि जैसे ही समाप्त होती है वहाँ महर्षि कण्व का प्रवेश होता है। कण्व को देखकर शकुन्तला लज्जा का अनुभव करती है। पास में स्थित माता गौतमी के आदेश से शकुन्तला कण्व का अभिवादन करती है तो महर्षि कण्व शकुन्तला को आशीर्वाद देते हैं।

कण्व के आशीर्वाद के पश्चात् शकुन्तला की विदाई का आरम्भ होता है। शकुन्तला को माता गौतमी, शाङ्र्गरव एवं शारद्वतमिश्रा हस्तिनापुर छोड़ने के लिए जाते हैं। शकुन्तला की विदाई के अवसर पर महर्षि कण्व के मुख से शकुन्तला से सेवित समस्त प्राकृतिक वन वनस्पतियों को उसे विदाई की अनुमति देने के लिए अत्यन्त मार्मिक वचन निकलता है–

महर्षि कण्व के उक्त वचन को सुनकर शकुन्तला को वन-बन्धु-वृक्ष उसे पतिगृह जाने की अनुमति देते हैं। जब शकुन्तला पतिगृह को प्रस्थान करती है उस समय आश्रम की दशा अत्यन्त कारुणिक हो जाती है– हिरिणीयाँ दर्भों को चबाना बन्द कर देती हैं,

मयूर नाचना बन्द कर देते हैं तथा लताएँ भी मानो जीर्ण पत्तों को गिराकर अश्रु बहा रही हों। विदाई के अवसर पर कालिदास ने शकुन्तला, अनसूया और प्रियंवदा के कारुणिक संवाद का चित्रण किया है।

जब शकुन्तला आश्रम से कुछ दूर पहुँचती है तो उसके साथ चल रहे कण्व एवं अनसूया और प्रियंवदा को आगे जाने से रोकते हुए शाङ्र्गरव कहता है कि प्रिय व्यक्ति को जल दिखाई देने तक अनुसरण करना चाहिए, यह सरोवर का तीर दिखाई दे रहा है, हमें यहीं पर कुछ आवश्यक सन्देश देकर आप आश्रम लौट सकते हैं। तब महर्षि कण्व शाङ्र्गरव के माध्यम से दुष्यन्त को उपदेशात्मक सन्देश देते हैं–

अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुचैः कुलं चात्मन–
स्त्वय्यस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम्।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः ।।4/7।।

दुष्यन्त को उपदेश देने के बाद महर्षि कण्व ने शकुन्तला को जो उपदेश दिया, वह भारतीय आदर्श एवं उदात्त मूल्यों को प्रस्तुत करता है–

सरोवर के तट पर दोनों सखियाँ शकुन्तला से कहती हैं कि यदि किसी कारण राजा दुष्यन्त तुम्हें पहचानने से मना करे तो उसे उसके द्वारा दी हुई मुद्रिका दिखा देना। सखियों की बात सुनकर शकुन्तला कहती है कि तुम्हारे इस सन्देह से मैं काँप जा रही हूँ, जिसे सुनकर दोनों सखियाँ शकुन्तला को आश्वस्त करती हैं– **'मा भैषीः। स्नेहः पापशङ्की'।** डरो मत, स्नेह पाप अथवा अनिष्ट की आशंका करता है। पतिगृह को जाती हुई शकुन्तला महर्षि कण्व से कहती है कि तात! मैं अब आश्रम में कब आ सकूँगी?

इसके बाद गौतमी महर्षि कण्व से दिन बीतने की बात करती है और उन्हें आश्रम लौट जाने के लिए अनुरोध करती है तो कण्व भी शकुन्तला को आश्रम के अनुष्ठान सम्पादन की अनिवार्यता समझाते हुए आश्रम जाने के कहते हैं, तो शकुन्तला उनसे गले लगकर भावुक हो जाती है। शकुन्तला के इस भावुक वचन को सुनकर कण्व भी दुःखी होते हैं।

इसके बाद शकुन्तला पतिगृह के लिए प्रस्थान करती है, महर्षि कण्व के साथ अनसूया और प्रियंवदा भी आश्रम में प्रवेश करती हैं। शकुन्तला की सकुशल विदाई कर देने के बाद महर्षि कण्व को दायित्व से निवृत्ति की अनुभूति होती है, वह कहते हैं–

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।4/22।।

इस दृश्य के साथ चतुर्थ अंक की समाप्ति होती है।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

i) विष्कम्भक की योजना से सूचित होता है–

(क) भूत की कथावस्तु (ख) भविष्य की कथावस्तु

(ग) वर्तमान की कथावस्तु (घ) भूत और भविष्य की कथावस्तु

ii) शकुन्तला को शाप मिलता है–

(क) दुष्यन्त से (ख) कण्व से

(ग) दुर्वासा से (घ) गौतम से

iii) कण्व को दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह की सूचना मिलती है–

(क) गौतमी से (ख) आकाशवाणी से

(ग) अनसूया से (घ) शिष्यों द्वारा

iv) दुर्वासा से उनके द्वारा दिए गए शाप से मुक्ति की प्रार्थना करती है–

(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया

(ग) अनसूया और प्रियंवदा दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

v) 'भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधूबन्धुभिः' इस कथन के वक्ता हैं–

(क) कण्व (ख) अनसूया

(ग) प्रियंवदा (घ) गौतमी

अभ्यास प्रश्न 1

1) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अंक का सार अपने शब्दो में लिखिए।

13.3 प्रकृति का मानवीकरण

महाकवि कालिदास के काव्यों विशेषकर 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में प्रकृति का मानवीकरण पदे-पदे देखा जा सकता है। प्रकृति की निर्जीव वस्तु भी जब कवि की प्रतिभा से सजीव जैसा व्यवहार करने लगे ऐसी स्थिति को प्रकृति का मानवीकरण कहते हैं। यह कालिदास की वर्णनचातुरी ही है जिससे उनके काव्यों में नाना प्रकार के वृक्ष, लता, वनस्पति आदि निर्जीव वस्तु भी मनुष्यों की तरह संवाद करते हुए दिखाई देते हैं। शकुन्तला आश्रम के समस्त प्राकृतिक वस्तुओं से सहोदर स्नेह रखती है, इसी कारण वृक्ष भी शकुन्तला के लिए कारुणिक बन जाते हैं वे भी शकुन्तला के प्रति अपना दायित्व समझते हुए उसकी विदाई के अवसर पर अनेक दिव्यातिदिव्य आभरण प्रदान करते हैं–

क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं
निष्ठ्यूतश्चरणोपरागसुलभो लाक्षारसः केनचित्।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितै–
र्दत्तान्याभरणानि न किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः।।4/5।।

महाकवि कालिदास प्रकृति में इतने घुले-मिले, रचे-बसे हुए हैं कि उन्हें हर स्थल पर प्रकृति मानव स्वभाव धारण किए हुए लगती है– इसका सहज निदर्शन हमें– **'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या'**, – इस पद्य में मिलता है। जब व्यक्ति दुःख में होता है तो उसे आत्मीय पुरुषों का स्मरण होता है, शकुन्तला की विदाई के अवसर पर महर्षि कण्व ने अपनी पीड़ा आश्रम के अचेतन वृक्षों से व्यक्त की है। यदि कालिदास के मन में प्रकृति और मानव के मध्य कोई भिन्नता होती तो सम्भवतः वे कण्व के मुख से वैसा उद्गार व्यक्त नहीं कराते।

जब महर्षि कण्व शकुन्तला की विदाई करने हेतु वृक्षों और वनस्पतियों से अनुमति माँगते हैं तो वृक्ष भी मानवोचित व्यवहार को धारण कर शकुन्तला की विदाई हेतु अनुमति प्रदान करते हैं–

अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः ।

परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम् ।।4/10।।

यहाँ पर वृक्षों ने शकुन्तला की विदाई हेतु अपनी अनुमति स्वयं पर आरूढ़ कोयलों के स्वर के माध्यम से दी है, अतः यह पद्य प्रकृति के मानवीकरण का उत्तम उदाहरण है।

जब शकुन्तला का तपोवन से वियोग हो रहा होता है तब उसे बहुत दुःख होता है, इस पर प्रियंवदा उससे कहती है कि यह दुःख केवल तुम्हें ही नहीं है बल्कि जो पीड़ा तपोवन को छोड़ते हुए तुम्हें हो रही है वही पीड़ा देखो तपोवन को भी हो रही है– **'न केवलं तपोवनकातरा सख्येव। त्वयोपस्थितवियोगस्य तपोवनस्यापि तावत्समवस्था दृश्यते'**–

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।

अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।4/12।।

जैसे किसी के वियोग में उसके साथ रह रहे आत्मीय जन दुःख पाते हैं उसी प्रकार आश्रम की हिरणियाँ भी शकुन्तला की विदाई से दुःख की अनुभूति कर रही हैं, मयूरों ने शकुन्तला के वियोग में नाचना बन्द कर दिया है और पीले पत्तों को गिराने के बहाने मानो लताएँ रो रही हैं। यहाँ भी लता आदि प्राकृतिक वस्तु में मानवोचित अश्रुपात आदि व्यवहार का वर्णन होने से प्रकृति का मानवीकरण देखा जा सकता है।

इस तरह आप देख सकते हैं कि महाकवि कालिदास के काव्य में प्रकृति और मानव का शाश्वत सम्बन्ध विद्यमान है। जिन प्राकृतिक वस्तुओं को लोग निर्जीव मानते हैं वे ही महाकवि कालिदास के काव्य में मानवोचित व्यवहार करती हुईं पाठक को संवेदना के शीर्ष स्तर पर पहुँचाती हैं।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित में सही विकल्प का चयन कीजिए–

i) 'उद्गलितदर्भकवला' विशेषण है–

(क) मयूरों का (ख) मृगियों का

(ग) लताओं का (घ) इनमें से कोई नहीं

ii) 'दर्भ' का पर्यायवाची है–

क) लता ख) कुश

ग) वृक्ष घ) कंटक

iii) 'परभृत' पद से बोध होता है–

क) कौवे का ख) तोते का

ग) कोयल का घ) सिंह का

iv) 'क्षौम' पद का अर्थ है–

क) फल ख) आभूषण

ग) रेशमी वस्त्र घ) इनमें से कोई नहीं

v) 'लाक्षारसः' पद का अर्थ है–

क) सुगन्धितवस्तु ख) महावर

ग) कंगन घ) सिन्दूर

अभ्यास प्रश्न 2

1) महाकवि कालिदास के प्रकृति वर्णन पर टिप्पणी लिखिए।

13.4 कालिदास की रचनाओं में ध्वन्यात्मकता

महाकवि कालिदास के काव्यों में ध्वनि की सत्ता निरन्तर विद्यमान है। महाकवि कालिदास शब्दों के प्रयोग में सिद्ध हैं। कालिदास अपने काव्यों में व्यङ्ग्यार्थ को व्यक्त करने वाले शब्दों का ग्रहण करते हैं। काव्य के वाच्यार्थ/अभिधेयार्थ/मुख्यार्थ के बोध के बाद जो व्यङ्ग्यार्थ की अभिव्यक्ति होती है उसी को ध्वनि कहते हैं, काव्यशास्त्रियों ने ध्वनि को ही काव्य की आत्मा माना है। यह ध्वनि तीन प्रकार की होती है– 01 रसध्वनि, 02 अलङ्कारध्वनि, 03 वस्तुध्वनि। महाकवि कालिदास के काव्यों में ध्वनि के समस्त प्रकारों की सहज स्थिति सहृदयों के द्वारा अनुभूत की जाती है, जैसे–

अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा।

इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि।।4/3।।

प्रस्तुत पद्य में अलंकारध्वनि है क्योंकि यहाँ चन्द्रमा के अस्त होने के व्यवहार से दुष्यन्त के राजधानी लौट जाने (अथवा शाप के कारण शकुन्तला का विस्मरण हो जाने) का व्यवहार आरोपित है, कुमुदिनी नष्ट कान्ति वाली हो गई है– से शकुन्तला की कान्ति नष्ट होना सूचित होता है, इस कारण चन्द्र और कुमुदिनी में क्रमशः दुष्यन्त-शकुन्तला– रूप नायक, नायिका के व्यवहार के आरोपण से समासोक्ति अलंकार है।

इसी तरह 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया' इस पद्य में 'यास्यति' पद की व्यञ्जना दर्शनीय है। 'यास्यति' पद के प्रयोग से कण्व का दुःखाधिक्य प्रकट होता है। इस श्लोक में 'यास्यति' के स्थान पर 'याति' पद का प्रयोग किया जा सकता था जिससे अर्थ होता कि शकुन्तला जा रही है, इसलिए कण्व को अनेक प्रकार से दुःख हो रहा है किन्तु 'याति' पद के प्रयोग से कारुणिकता में न्यूनता होती, क्योंकि आत्मीय जनों के हो रहे वियोग से तो सभी को दुःख होता है, किन्तु कण्व को शकुन्तला के भावी वियोग के चिन्तनमात्र से ही अनेक प्रकार का दुःख हो रहा है, जब शकुन्तला साक्षात् जा रही होगी तो उन्हें कितना दुःख होगा। अतः 'यास्यति' पद के प्रयोग से कण्व की अतिशय दुःखाभिव्यक्ति को समझने में सहायता मिलती है।

इसी प्रकार 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या' इस पूर्वोक्त पद्य के अनेक पदों में ध्वन्यात्मकता है, इसमें– 'युष्मासु अपीतेषु या जलं पातुं प्रथमं न व्यवस्यति' अर्थात् जो तुम्हारे जल पिये बिना जल नहीं पीती थी (वह शकुन्तला जा रही है) – यह अर्थ अभीष्ट है किन्तु यह अर्थ 'अव्यवस्यत्' पद के प्रयोग से सम्भव था।

'व्यवस्यति' इस वर्तमान काल के लट् लकार से यह अर्थ आता है कि– जो तुम्हारे जल पिये बिना जल नहीं पीती है। 'व्यवस्यति' पद से यह ध्वनि निकलती है कि शकुन्तला की अब भी वही स्थिति है अर्थात् अब भी वह तुम्हें जल पिलाकर ही जल पीती है। 'प्रियमण्डनाऽपि' पद के प्रयोग से किसलयों को आभूषण के रूप में तोड़ने की योग्यता सूचित होती है। 'सर्वैरनुज्ञायताम्' पद से यह ध्वनि निकलती है कि सभी मिलकर ही शकुन्तला को जाने की अनुमति दो, पृथक्-पृथक् अनुमति देने से विलम्ब होने की सम्भावना है। पतिगृहम्– पति के घर को– इससे अनुमति देने का उचित समय है कि व्यंजना होती है।

चतुर्थ अंक में करुण रस का प्रवाह है जो निम्न पद्य में तीक्ष्णतर हो गया है–

शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।

उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः।।4/21।।

इस पद्य में शकुन्तला के वियोग से कण्व को होने वाले शोक का वर्णन है जिससे करुण रस व्यक्त होता है।

13.5 काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला

अभी तक आपने इस इकाई के माध्यम से 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से सम्बन्धित कथावस्तु के अतिरिक्त कुछ काव्यगत-विशेषताओं के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। अब महाकवि कालिदास के विषय में अत्यन्त लोकप्रिय सूक्ति– 'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला' की अन्तर्निहित भावना के विषय में आपको ज्ञान प्राप्त करना है। कालिदास के विषय में प्रचलित उक्त सूक्ति का पूर्ण आकार निम्नलिखित है–

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

शकुन्तलायां चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्।।

अर्थात् काव्यों अथवा काव्यविधाओं में नाटक सबसे रमणीय है, नाटकों में भी महाकवि कालिदास प्रणीत– 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नामक नाटक रमणीयतम है और इस नाटक के समग्र अंकों में चतुर्थ अंक सर्वोत्कृष्ट है तथा चतुर्थ अंक में भी चार श्लोक रमणीयता की पराकाष्ठा हैं।

अब आपको– 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' कहने के मूल आशय पर ध्यान देना चाहिए, काव्य की अनेक विधाएँ हैं, जैसे– महाकाव्य, खण्डकाव्य, शतककाव्य, गद्यकाव्य, चम्पूकाव्य तथा नाटक किन्तु काव्य की उन समस्त विधाओं में नाटक का स्थान सबसे ऊपर है, क्योंकि काव्य की अन्यविधाओं में हम केवल पाठ का श्रवण करते हैं किन्तु नाटक में आप पात्रों के पाठ का श्रवण तथा पाठानुगुण उनके अभिनय का साक्षात् दर्शन भी करते हैं जिससे पाठ को समझने में हमें कठिनाई नहीं आती। इस कारण काव्यविधाओं में नाटक का स्थान सर्वोच्च है। संस्कृत साहित्य में नाटक भी भिन्न-भिन्न नाटककारों के द्वारा लिखे गये हैं, किन्तु सहृदयों ने उन नाटकों में भी नाटकीय गुणों के मानक को पूरा करने की दृष्टि से 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' को सबसे योग्य पाया है अतः उन्होंने– 'तत्र रम्या शकुन्तला' कहा। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सात अंक हैं सभी अंक सहृदय के हृदय को आह्लाद देने में समर्थ हैं तथापि इसका चतुर्थ अंक अर्थ की रमणीयता एवं प्राणवत्ता का संचार करने की दृष्टि से सबसे श्लाघनीय है। यद्यपि इस

चतुर्थ अंक के प्रत्येक गद्यात्मक संवाद एवं पद्यात्मक संवाद रचना के गुणों को धारण करने वाले हैं और सहृदयों के मन में आनन्द भरने वाले हैं, तो भी संवाद की तलस्पर्शिता के कारण सहृदयों ने इसके चार पद्यों को सर्वश्रेष्ठ माना, जिसमें– 01 यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं, 02 पातुं न प्रथमम्, 03 शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीं वृत्तिं सपत्नीजने, 04 अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्– श्लोक शामिल हैं। कुछ सहृदय चतुर्थ श्लोक के रूप में– 'अर्थो हि कन्या परकीय एव'– को स्थान देते हैं।

उक्त सूक्ति की यदि हम कुछ मीमांसा करें तो पाते हैं कि महाकवि कालिदास का विशेष रूप से यह चतुर्थ अंक उन्हें कनिष्ठिकाधिष्ठित बनाता है। यह चतुर्थ अंक की कथा योजना ही है जिसके ऊपर इस नाटक का नामकरण किया गया है। इस अंक में दो पड़ाव आते हैं पहला विष्कम्भक के द्वारा अतीत की घटनाओं की सूचना देना, जिसमें शकुन्तला के संग दुष्यन्त के विवाह की सूचना तथा विवाहोपरान्त दुष्यन्त के राजधानी हस्तिनापुर लौट जाने की सूचना दी गई है। विष्कम्भक के माध्यम से शकुन्तला को दुर्वासा ऋषि के द्वारा आतिथ्य सत्कार नहीं करने के कारण शाप मिलना भी बताया गया है। इसके बाद नाटक रंगमंच पर क्रमशः पात्रों के संवाद की गति के साथ आगे बढ़ता है। जब सोमतीर्थ से महर्षि कण्व का आगमन होता है तो दोनों सखियाँ– अनसूया और प्रियंवदा महर्षि कण्व से शकुन्तला के विवाह एवं दुष्यन्त संसर्ग से उसके गर्भिणी होने के विषय में सूचना तो देना चाहती हैं किन्तु उन्हें प्रकृतिसुलभ लज्जा और संकोच दोनों का अनुभव होता है,– यह भारतीय आदर्श भी है कि कन्यायें बड़ों से इस प्रकार की बातें नहीं करतीं। अब महर्षि कण्व को उनकी अनुपस्थिति में आश्रम में घटित घटनाओं से परिचित कौन कराए? यह प्रश्न उपस्थित होता है किन्तु महाकवि कालिदास अपनी नाट्यचातुरी से अशरीरिणी वाणी के द्वारा कण्व को विगत समस्त घटनाओं से परिचित कराते हैं। विदाई का समस्त प्रसंग सहृदय पाठकों को संवेदना के उच्च क्षितिज पर पहुँचाता है। महर्षि कण्व के द्वारा शकुन्तला के प्रति दिया गया उपदेश भारतीय संस्कृति भारतीय आचारपद्धति को व्यक्त करता है। पिता का अपनी कन्या के प्रति जो प्रेम है वह साथ रहने पर व्यक्त हो न हो किन्तु जब कन्या की विदाई होती है तो उस विदाई से कण्व जैसा महर्षि भी अपनी धैर्य-परम्परा को छोड़कर सामान्य पुरुष के समान बन जाता है– 'वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः'। इस अंक की शापयोजना वस्तुतः इस नाटक का प्राण है, जो आगे के अंकों को पढ़ने के लिए पाठकों को अनायास प्रेरित करता है।

13.6 उपमा कालिदासस्य

हमारे संस्कृत कवियों की रचना में कुछ न कुछ पारस्परिक विशेषता पाई जाती है, कोई कवि उपमा अलङ्कार का सुन्दर प्रयोग करने से प्रसिद्ध है तो कोई अर्थगौरव की दृष्टि से। इसी तरह कोई कवि पदों का समुचित प्रयोग करने में प्रसिद्ध है। इस विषय में किसी विद्वान् का प्रसिद्ध कथन है –

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

अर्थात् महाकवि कालिदास उपमा अलङ्कार के प्रयोग में प्रसिद्ध हैं, भारवि अर्थगौरव के कारण प्रसिद्ध हैं, दण्डि पद पटुता के कारण प्रसिद्ध हैं तथा महाकवि माघ – उपमा अलङ्कार, अर्थगौरव और पदलालित्य, इन तीनों गुणों को समान रूप से प्रयोग

करने में प्रसिद्ध हैं। यद्यपि महाकवि कालिदास की प्रसिद्धि में अनेक कारण हैं किन्तु अनेक सहृदय कालिदास को सटीक उपमा देने में सिद्ध मानते हैं, इस दृष्टि से कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक में उपमा के कुछ रुचिकर स्थल को प्रस्तुत किया जा रहा है। दुर्वासा द्वारा शकुन्तला को शाप देने के अवसर पर 'कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव' का प्रयोग किया गया है अर्थात् वह (दुष्यन्त) तुम्हें पागल की तरह भूल जाए। जैसे पागल को अपने द्वारा किए हुए किसी काम की स्मृति नहीं रहती वैसे ही दुष्यन्त भी तुम्हें विस्मृत कर देगा। यहाँ जो दुष्यन्त की उपमा पागल से दी गई है वह सटीक है, राजा दुष्यन्त उपमेय है प्रमत्तः उपमान है, विस्मरण साधारण धर्म है इव उपमावाचक पद है। इन चारों उपमा सामग्री के होने से यह पूर्णोपमा है। उपमा में उपमेय की अपेक्षा उपमान अधिक गुणों वाला होता है इस सिद्धान्त का पालन महाकवि कालिदास ने किया है क्योंकि दुष्यन्त और प्रमत्त दोनों में विस्मरण रूपी गुण है किन्तु दुष्यन्त का विस्मरण प्रमत्त की तरह नहीं है प्रमत्त तो सभी बात भूल जाता है किन्तु दुष्यन्त को केवल शकुन्तला विषयक बातों का विस्मरण होगा, अन्य विषयों की स्मृति उसे रहेगी। इस कारण उपमेय की अपेक्षा उपमान में अधिक गुण है।

महाकवि कालिदास ने कई जगह कुछ विचित्रता देने के लिए उपमेय का ग्रहण किए बिना केवल उपमान के द्वारा कथन किया है जैसे– 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' (कौन गरम पानी से नवलता को सींचता है)। यह उक्ति प्रियंवदा की है जो अनसूया और प्रियंवदा के दुर्वासा द्वारा दिए गए शाप को शकुन्तला से छिपाने रखने के लिए परामर्श करने के अवसर पर प्रियंवदा द्वारा कही गई है, यहाँ नवमालिका और उष्णोदक उपमान हैं। यहाँ उपमानरूप नवमालिका का उपमेय शकुन्तला है तथा उपमान रूप उष्णोदक का शाप उपमेय है। यद्यपि उपमेय को शब्द से नहीं कहा गया है किन्तु कालिदास के कथ्य में उपमा की इतनी सटीकता है कि पाठक के सामने लुप्त हुए उपमेय उपस्थित हो जाते हैं, जिससे लुप्तोपमा भी पूर्णोपमा की तरह लगती है।

एक अन्य प्रसंग में जब महर्षि कण्व को शकुन्तला दुष्यन्त के गान्धर्व विधि से विवाहित होने का ज्ञान होता है तो कण्व ने शकुन्तला से उसके विवाह का अनुमोदन करते हुए कहा– 'सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीया संवृत्ता' (योग्य शिष्य को दी गई विद्या की तरह तुम अशोचनीय हो गई हो) यहाँ भी उपमा सारगर्भित है। जिस तरह गुरु अपनी विद्या को सभी को नहीं बल्कि योग्य शिष्य को देना चाहता है, और उसे देकर वह विश्वास में हो जाता है कि अब यह मेरी विद्याओं का ठीक से प्रचार-प्रसार कर रक्षा करेगा उसी तरह मैं (तुम्हारा पिता भी) दुष्यन्त रूपी वर का चयन करने वाली तुम्हारे विषय में चिन्ता मुक्त हो गया हूँ क्योंकि दुष्यन्त तुम्हारा आजीवन ध्यान रखेगा।

शकुन्तला के विवाह के प्रसंग में महर्षि कण्व को हुई आकाशवाणी में उपमा का मनोरम प्रयोग है–

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।

अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।।4/4।।

यहाँ शकुन्तला की उपमा शमी से की गई है। महाकवि कालिदास प्रकृति के इतने पारखी हैं कि उन्हें प्रकृति के बाह्य सौन्दर्य के अलावा आन्तरिक सौन्दर्य का भी ज्ञान है। कवि शमी के गर्भगत विशेषताओं से परिचित यदि न होता तो वह शमी का प्रयोग

न करके किसी अन्य उपमान का प्रयोग करता। यह अलग बात है कि उस उपमान से सौन्दर्य आ पाता की नहीं किन्तु जिस उपमान से सौन्दर्य आ सकता है महाकवि कालिदास उससे सर्वथा परिचित हैं। शमी के भीतर अग्निमय तेज विद्यमान रहता है, इस ज्ञान को कालिदास ने सही स्थल पर उतार दिया क्योंकि शकुन्तला के भीतर पल रही सन्तान सामान्य नहीं है वह भी तेजरूप है, शमी भी पवित्र तो शकुन्तला भी पवित्र। इसलिए महाकवि कालिदास शकुन्तला की तुलना शमी से कर हैं। जिससे पूरा प्रसंग रोचक बन जाता है। इसी तरह महाकवि कालिदास ने अनेक स्थलों पर उपमालंकार का मनोरम प्रयोग किया है।

बोध प्रश्न 3

1) निम्नलिखित में सही विकल्प का चयन कीजिए–

i) 'काव्येषु.....रम्यम्'–

(क) गद्य (ख) पद्यम् (ग) चम्पू (घ) नाटक

ii) नाटक के लिए सत्य कथन है–

(क) यह केवल पठनीय होता है

(ख) यह केवल दर्शनीय होता है

(ग) यह पठनीय और दर्शनीय दोनों होता है

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

iii) 'कनिष्ठिकाधिष्ठित' विशेषण है –

(क) माघ के लिए

(ख) भारवि के लिए

(ग) भास के लिए

(घ) कालिदास के लिए

iv) शकुन्तला के विवाह के पूर्व महर्षि कण्व गये थे–

(क) इन्द्रलोक

(ख) प्रयागतीर्थ

(ग) सोमतीर्थ

(घ) केदारतीर्थ

v) महाकवि कालिदास प्रसिद्ध हैं–

(क) उपमा के लिए

(ख) अर्थगौरव के लिए

(ग) पद लालित्य के लिए

(घ) इनमें से कोई नहीं

अभ्यास प्रश्न

1) महाकवि कालिदास अपनी उपमाओं के लिए प्रसिद्ध हैं, स्पष्ट कीजिए।

13.7 सारांश

प्रस्तुत इकाई के माध्यम से आपका 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के चतुर्थ अंक से परिचय हुआ। इस इकाई को पढ़कर आपको जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उसे और दृढ़ करने की दृष्टि से यहाँ समस्त इकाई का सारांश प्रस्तुत जा रहा है। सबसे पहले आपने चतुर्थ अंक की कथावस्तु के बारे में पढ़ा। इस अंक का प्रारम्भ विष्कम्भक योजना से होता है। विष्कम्भक के माध्यम से नाटक की भूत और भावी घटनाओं के बारे में सूचना दी जाती है। चतुर्थ अंक के विष्कम्भक के द्वारा शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विधि से विवाह हो जाने की सूचना दी जाती है। विष्कम्भक के माध्यम से विवाहोपरान्त दुष्यन्त के राजधानी (हस्तिनापुर) चले जाने की भी सूचना दी गई है। राजा दुष्यन्त के राजधानी चले जाने पर शकुन्तला उसी के ध्यान में लीन रहने लगती है। एक दिन सुलभकोपी दुर्वासा ऋषि का आश्रम में आगमन होता है, तो शकुन्तला दुष्यन्त के ध्यान में लीन रहने के कारण उनका आतिथ्य तो दूर उन्हें देख भी नहीं पाती, जिससे महर्षि दुर्वासा क्षुब्ध होकर शकुन्तला को शाप देते हैं कि तुमने जिसके ध्यान में लीन होकर मुझ जैसे तपस्वी का अनादर किया है वह व्यक्ति जैसे पागल किसी कार्य को करके बाद में उसे भूल जाता है वैसे ही (दुष्यन्त) तुम्हें भूल जाए– यह घटना भी विष्कम्भक के माध्यम से ही सूचित की गयी है। प्रियंवदा प्रार्थनापूर्वक दुर्वासा से शाप मुक्ति का उपाय पूछती है तो दुर्वासा ने दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दी हुई किसी वस्तु को दिखाने से शाप मुक्ति बताते हैं तथा सखियाँ शकुन्तला को शाप की बात नहीं बताने के विषय में निर्णय लेती हैं– इस वर्णन के साथ विष्कम्भक योजना की समाप्ति होती है। बाद में महर्षि कण्व का सोमतीर्थ से आगमन होता है, आगमन के पश्चात् उन्हें शकुन्तला विषयक उनकी अनुपस्थिति में घटी सारी घटनाओं का ज्ञान अशरीरिणी वाणी के द्वारा हो जाता है। इसके बाद महर्षि कण्व शकुन्तला की विदाई के बारे में निर्णय लेते हैं। महाकवि कालिदास ने विदाई के प्रसंग का बड़ी मार्मिकता से वर्णन किया है।

इसके बाद महाकवि कालिदास के प्रकृति के मानवीकरण विषय से आपका परिचय होता है। आप पढ़ते हैं कि कालिदास ने आश्रम की निर्जीव वस्तु में भी प्राण का संचार करके उससे पुरुषोचित कार्य तथा व्यवहार कराया है, जो कालिदास के विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है। आप पढ़ते हैं कि कैसे आश्रम के वृक्षों ने शकुन्तला की विदाई के अवसर पर रेशमी वस्त्र तथा आभरण प्रदान किया है। शकुन्तला की विदाई के अवसर पर हिरणियाँ दर्भ को चबाना बन्द कर देती हैं तथा मुँह में विद्यमान कुशों को उगलना प्रारम्भ कर देती हैं, मयूरों ने नर्तन करना बन्द कर दिया है, लताएँ भी मानो पुराने पत्तों को गिराने के बहाने अश्रु गिरा रही हों।

इसके बाद कालिदास के काव्यों में ध्वन्यात्मकता के विषय से आप परिचित होते हैं। इस क्रम में आप जानते हैं कि– ध्वनि क्या होती है? ध्वनि के कितने भेद हैं? कवि अपने काव्य में व्यङ्ग्यार्थ को व्यक्त करने वाले शब्द का प्रयोग करता है, ऐसे शब्द को व्यञ्जक शब्द कहा जाता है। सहृदय जन अपनी सहृदयता से उस व्यञ्जक शब्द को जानकर काव्यात्मतत्त्व का आनन्द लेते हैं। इस दृष्टि से आप महाकवि कालिदास के विविध पदों की व्यंजना से परिचित होते हैं।

महाकवि कालिदास के काव्य के विषय में प्रचलित– 'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला' इस सूक्ति की मूल भावना से आपका परिचय होता है। इस क्रम में आप

महाकवि कालिदास की काव्य कला और इसके आन्तरिक सौन्दर्य पक्ष को जानते हैं। कथ्य के निर्वाह में महाकवि कालिदास के सामर्थ्य और चातुर्य से आपका परिचय होता है।

13.8 शब्दावली

वैक्लव्यम्	–	विकलता का भाव
प्रियमण्डनापि	–	प्रिय है आभूषण जिसको वह
अनुमतगमना	–	अनुमति मिल गई है जाने की जिसको वह
प्रतिवचनीकृतम्	–	उत्तर दिया गया
प्रतिपत्तिः	–	बहुमान, आदर, बोध
दाराः	–	स्त्री
आयत्तम्	–	अधीन

13.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
2) संस्कृत साहित्य का इतिहास
3) निबन्धशतकम्
4) कालिदास का भारत

13.10 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) (घ) भूत और भविष्य की कथावस्तु, ii) (ग) दुर्वासा का, iii) (ख) आकाशवाणी से, iv) (क) प्रियंवदा, v) (क) कण्व

बोध प्रश्न 2

1) i) (ख) मृगियों का, ii) (ख) कुश, iii) (ग) कोयल का, iv) (ग) रेशमी वस्त्र, v) (ख) महावर

बोध प्रश्न 3

1) i) (घ) नाटकम्, ii) (ग) यह पठनीय और दर्शनीय दोनों होता है, iii) (घ) कालिदास के लिए, iv) (ग) सोमतीर्थ, v) (क) उपमा के लिए

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।